

## प्रोफेसर ऑफ एमीनेंस व जीआईबीएस के प्रिंसिपल डायरेक्टर ने बताया- पैरेंट्स कैसे बच्चों को सफल नागरिक बना सकते हैं बच्चों के मार्क्स पर नहीं बिहेवियर पर ध्यान दें, इससे मार्क्स जरूर आएंगे: डॉ. साहनी

सिटी रिपोर्टर . जोधपुर

प्रोफेसर ऑफ एमीनेंस एवं जिंदल इंस्टीट्यूट ऑफ बिहेवियरल साइंस (जीआईबीएस) के प्रिंसिपल



डॉ. संजीव पी साहनी।

डायरेक्टर डॉ. संजीव पी. साहनी का कहना है कि पैरेंट्स बच्चों के मार्क्स पर नहीं बिहेवियर पर ध्यान दें, क्योंकि बिहेवियर अच्छा होगा तो अच्छे

मार्क्स अपने आप आ जाएंगे। बच्चों में संस्कार माता-पिता से ही आते हैं। लोग स्कूलों और संगत को दोष देते हैं, लेकिन उनका असर बहुत कम है। वे शक्रवार को पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। वे जोधपुर में इमोशनल वेल-बिहा एंड स्ट्रेस मैनेजमेंट पर शनिवार रात 5:30 बजे से होटल ताज हरि में होने वाले ट्रेनिंग कार्यक्रम में बतौर वक्ता स्कूल प्रिंसिपल्स, टीचर्स व काउंसलर्स को संबोधित करेंगे।

डॉ. साहनी ने बताया कि उनका पूरा प्रयास है कि देश में ही ऐसी सारी

सुविधा की जाए, ताकि बच्चे हायर एजुकेशन के लिए बाहर की विवि में न जाएं। इसके लिए 2009 में यूनिवर्सिटी खोली और इसमें सोशल साइंसेज पर ज्यादा जोर दिया। कारण कि यह हर प्रोफेशन में उपयोगी है। बच्चों को अपने आप सीख लेने और समझ लेने की प्रेरणा दें। उन्हें खुद डिमिशन लेने की छूट दें और उन्हें हर कार्य में इनवॉल्व करें, न कि उन पर अपनी मर्जी थोपें।

कोरोनाकाल में बच्चे घर में अधिक समय तक रहने से एग्रेसिव हो गए हैं। ऐसे में पैरेंट्स को चाहिए कि वे बच्चों को बाहर भेजें, उसे अपने मन की करने दें। इसका एक कारण यह भी है कि छोटे बच्चे अपने आसपास जो भी चीजें देखते हैं, उसी को वे सच मान लेते हैं। वहीं से वे कई अच्छी और गलत बातें सीख लेते हैं। पैरेंट्स बच्चे को जैसे ढालेंगे, बच्चे उसी तरह से ढलते चले जाएंगे। पैरेंट्स को कम उम्र से ही बच्चों को जीवन से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण वैल्यूज के बारे में बताना जरूरी है, ताकि वे बड़े होकर ईमानदार और सफल व्यक्ति बन सकें।

स्ट्रेस जरूरी, यह अच्छा करने के लिए प्रेरित करता है

डॉ. साहनी ने माता-पिता के व्यवहार स्वरूपों और बच्चों पर इसके परिणामी प्रभावों पर बल दिया। उन्होंने कहा कि ये व्यवहार सुसंगत और असंगत दोनों हो सकते हैं। बच्चों पर माता-पिता के असंगत व्यवहार का एक

प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है और परिणामस्वरूप उनके व्यवहार में परिवर्तन आता है। उन्होंने कहा कि स्ट्रेस को दूर नहीं करना चाहिए क्योंकि सभी स्ट्रेस अच्छा करने के लिए प्रेरित करते हैं। बच्चों को भी स्ट्रेस देना चाहिए ताकि वे कुछ सीख सकें। जो बच्चे अपनी इच्छाओं को कंट्रोल कर लेते हैं, वे अवश्य आगे बढ़ते हैं। वार्ता के दौरान शिक्षाविद डॉ. रवि गुंथे और जेएम बूब भी उपस्थित थे